



रहीम के दोहे

जीवन परिचय

- ▶ अब्दुल रहीम खानखाना का जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहौर में हुआ।
- ▶ यह अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक थे ।
- ▶ रहीम अपने दोहों में ज्ञान और नीति की बात करते हैं ।

- 
- ▶ दोहा अर्द्धसम मात्रिक छंद है।
 - ▶ यह दो पंक्ति का होता है इसमें चार चरण माने जाते हैं ।

उचित समय और उचित स्थान पर उचित कार्य करने की कला को नीति कहते हैं।

रहीम के दोहे हमें कई तरह की नैतिक शिक्षा और जीवन का गहरा ज्ञान देते हैं।

पाठ में दिए गए दोहों में सच्चे मित्र, सच्चे प्रेम, परोपकार, मनुष्य की सहनशक्ति आदि के बारे में बहुत ही सरल और मनोहर ढंग से बताया है।

कहि 'रहीम' संपत्ति सगे,
बनत बहुत बहु रीति।
बिपत्ति-कसौटी जे कसे, सोई
सांचे मीत॥

► रहीम के इस दोहे में वे कहते हैं कि जब हमारे पास धन – संपत्ति होती है तो सभी हमारे मित्र बनना चाहते हैं परंतु जो व्यक्ति मुसीबत में आपकी सहायता कर, आपके काम आए, वही आपका सच्चा मित्र होता है ।

जाल परे जल जात बहि,
तजि मीनन को मोह।
‘रहिमन’ मछरी नीर को
तऊ न छाँड़ति छोह ।2।

- ▶ रहीम दास के इस दोहे में उन्होंने सच्चे प्रेम के बारे में बताया है। उनके अनुसार, जब नदी में मछली पकड़ने के लिए जाल डालकर बाहर निकाला जाता है, तो जल तो उसी समय बाहर निकल जाता है। उसे मछली से कोई प्रेम कोई मोह नहीं होता। मगर, मछली पानी के प्रेम को भूल नहीं पाती है और उससे बिछुड़ने के दुख में तड़प-तड़प कर अपने प्राण त्याग देती है।

तरुवर फल नहिं खात है,
सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित,
संपति सँचहि सुजान ।३।

► पेड़ और सरोवर का उदाहरण देकर रहीम जी समझाना चाहते हैं कि जिस प्रकार पेड़ अपने ऊपर लगा हुआ फल कभी नहीं खाता है और सरोवर अपना पानी स्वयं नहीं पीता है अन्य लोगों को समर्पित कर देते हैं उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति अपने संचित धन का उपयोग केवल अपने लिए नहीं करते, वो उस धन से समाज कल्याण का कार्य भी करते हैं ।

थोथे बादर क्वार के, ज्यों
'रहीम' घहरात।

धनी पुरुष निर्धन भये,
करैं पाछिली बात।4।

- इस दोहे में रहीम दास जी ने कहा है कि जिस प्रकार क्वार के बादल केवल गरजते हैं, बरसते नहीं हैं। उसी प्रकार, कंगाल होने के बाद अमीर व्यक्ति अपने पिछले समय की बड़ी-बड़ी बातें याद करते रहते हैं, जिनका कोई मूल्य नहीं होता है। हमें वर्तमान में जीना चाहिए ।

धरती की सी रीत है,
सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहै,
त्यो रहीम यह देह।5।

► रहीम जी ने अपने इस दोहे में मनुष्य की सहनशीलता के बारे में बताया है। वो कहते हैं कि मनुष्य की सहनशक्ति बिल्कुल इस धरती के समान होनी चाहिए । जिस तरह धरती सर्दी, गर्मी, बरसात सभी मौसम एक समान रहकर झेल लेती है, ठीक उसी प्रकार हमें भी जीवन के सुख-दुख रूपी हर मौसम को सहन कर लेना है।